STD.-VIII HINDI LIT.(कौरव नगरी भाग -9)

प्रश्न उत्तर:-

प्रश्न1. 'यह जो पीड़ा ने, पराजय ने'

'दिया है ज्ञान, दृढ़ता ही देगा वह!'

विदुर ने ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर:- विदुर ने ऐसा इसलिए कहा है कि मनुष्य अपनी पराजय और अपनी ग़लतियों से जो सीखता है, वह दृढ़ होता है, अमिट होता है, क्योंकि वह उसे अनुभव से प्राप्त करता है।

इन पंक्तियों द्वारा विदुर धृतराष्ट्र को यही समझाते हैं कि उन्हें अपने पुत्रों की मृत्यु और कुरुक्षेत्र में कौरवों की हार से जो ज्ञान प्राप्त हुआ, अब जो वे सही - ग़लत का अंतर समझ पा रहे हैं, वह दृढ़ है। अब इस ज्ञान को वे चाहकर भी भुला या अस्वीकार नहीं कर पाएँगे।

प्रश्न2. 'भय से मुक्त होकर, तुम प्राप्त मुझे ही होगे।' - इससे क्या आशय है?

इसमें 'मुझे' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर:- यहाँ 'मुझे' से तात्पर्य प्रभु 'श्रीकृष्ण' से है।

श्रीकृष्ण कहते हैं जो मानव के अंदर भय है, जो संशय है , वह सभी प्रभु पर छोड़ देने चाहिएँ।

अगर मानव अपनी दुविधा, संशय और भय को प्रभु पर छोड़ देता है तो उसे ईश्वरत्व की प्राप्ति हो जाती है और वह जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है।आत्मा का परमात्मा से सच्चा मेल हो जाता है।

प्रश्न 3. गांधारी को क्या संदेह है?

उत्तर- गांधारी एक पतिव्रता नारी और कौरवों की माँ थी। पतिव्रता होने के कारण उसे अपने पति पर पूर्ण विश्वास था, चाहे वे कितने भी ग़लत हों तथा पुत्र-मोह के कारण उसे अपने पुत्र भी सही लगते थे।

जब श्रीकृष्ण ने कहा कि सारी परिस्थितियाँ उन पर छोड़ दो तो वह चीख़ीं कि अगर वह ईश्वरीय रूप होते तो निष्पक्ष होते तथा इस तरह उनके कुल का सर्वनाश नहीं होने देते।

अतः इस काव्य में गांधारी को श्रीकृष्ण के ईश्वरीय रूप पर संदेह है।